Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों का सांवेगिक परिपक्वता: एक अध्ययन

Ranjeet Kumar[1]* Dr. Ramesh Kumar[2]

[1] Research Scholar, Department of Education, OPJS University, Churu Rajasthan

[2] Supervisor, Department of Education, OPJS University, Churu Rajasthan

सार – *यह शोध पत्र जम्मू संभाग के सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता का आकलन करता है। पेपर का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि क्या शिक्षक अपने लिंग, योग्यता और स्थानीयता के संबंध में भावनात्मक परिपक्वता में भिन्न हैं। इसके लिए, सर्वेक्षण पद्धति को नियोजित करने वाली बहु-स्तरीय संभावना नमूनाकरण तकनीक के माध्यम से 200 शिक्षकों का एक नमूना चुना गया था। डेटा के संग्रह के लिए अन्वेषक द्वारा विकसित शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता पैमाने का उपयोग किया गया था। निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षकों में भावनात्मक परिपक्वता में कोई लैंगिक अंतर नहीं हैं। इसके अलावा शिक्षकों में उनकी योग्यता और स्थानीयता के संबंध में भावनात्मक परिपक्वता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं हैं।*

संकेत शब्द – *भावनात्मक परिपक्वता, शिक्षक, माध्यमिक विद्यालय*

----------X----------

परिचय

शिक्षकों को वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के मुख्य स्तंभ और संरक्षक के रूप में माना जाता है। वे मध्यस्थ हैं जिनके माध्यम से ज्ञान और जानकारी को छात्रों को हस्तांतरित किया जाता है जो समाज की नींव का प्रतिनिधित्व करते हैं। जब तक वे आवश्यक कौशल, विधियों, रणनीतियों, ज्ञान और शिक्षण योग्यता के अधिकारी नहीं होते, शिक्षक ज्ञान के प्रभावी और कुशल स्रोत नहीं हो सकते। हाल के वर्षों में, शिक्षकों के बीच भावनात्मक परिपक्वता की अवधारणा को इसके बढ़ते महत्व के कारण शैक्षिक संस्थानों में काफी ध्यान दिया जाता है। एक सफल, प्रभावी और सक्षम शिक्षक वह है जो अपने नकारात्मक भावों को वस्तुनिष्ठ तरीके से संभाल सकता है। सीखने के कौशल को विकसित करने के लिए विषय ज्ञान और योग्यता के अलावा, एक शिक्षक की भावनात्मक परिपक्वता उसकी छिपी प्रतिभाओं को चैनल करके एक छात्र के समग्र विकास को संभावित रूप से मजबूत कर सकती है। यह स्पष्ट है कि भावनाओं को नियंत्रित करना और नियंत्रित करना शिक्षकों के विश्वास और प्रमुख निर्धारक का एक प्रमुख घटक है जो शिक्षक सिखाते हैं। व्यक्तिगत और व्यावसायिक, बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक पहचान की भावना एक प्रभावी और कुशल शिक्षक होने के मूल में है।

इसलिए शिक्षकों के प्रदर्शन को प्रभावी और ऑपरेटिव बनाने के लिए यह कौशल वास्तव में आवश्यक और आवश्यक है। भावनात्मक परिपक्वता न केवल शिक्षकों को अपने छात्रों के साथ, बल्कि उनके सहयोगियों और समाज के साथ भी व्यवहार करने में सक्षम बना सकती है। यह अध्ययन माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक परिपक्वता का आकलन करने का प्रयास करता है।

भावनात्मक परिपक्वता

भावना एक ऐसा स्नेहपूर्ण अनुभव है जो किसी व्यक्ति की उभरी हुई मानसिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का साथ देता है और स्वयं को उसके व्यवहार से अलग दिखाता है। भावनाओं का हितों, जरूरतों और भावनाओं के साथ एक मजबूत संबंध है। यदि ये पूरे हो जाते हैं, तो एक व्यक्ति को एक सुखी, स्वस्थ और सफल जीवन का आनंद लेने के लिए कहा जाता है।

www.ignited.in

भावना एक ऐसा स्नेहपूर्ण अनुभव है जो किसी व्यक्ति की उभरी हुई मानसिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं का साथ देता है और स्वयं को उसके व्यवहार से अलग दिखाता है। भावनाओं का हितों, जरूरतों और भावनाओं के साथ एक मजबूत संबंध है। यदि ये पूरे हो जाते हैं, तो एक व्यक्ति को एक सुखी, स्वस्थ और सफल जीवन का आनंद लेने के लिए कहा जाता है।

भावनात्मक परिपक्वता को परिभाषित किया जाता है कि एक व्यक्ति स्थितियों में कितना सक्षम है, अपनी भावनाओं को नियंत्रित करें और दूसरों के साथ व्यवहार करते समय परिष्कृत तरीके से व्यवहार करें। यह उसकी भावनाओं को समझने की क्षमता है और दूसरों को भी जो आपके आसपास हैं। भावनात्मक परिपक्वता की अवधारणा का अर्थ है कि आपके पास एक आत्म-जागरूकता होनी चाहिए जो आपको भावनाओं को पहचानने, प्रबंधित करने और अपनी भावनाओं को नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है। भावनात्मक रूप से परिपक्व वह नहीं है जिसने आवश्यक रूप से उन सभी स्थितियों को हल कर लिया है जो चिंता और संभावना को जगाती हैं, लेकिन यह खुद को स्पष्ट परिप्रेक्ष्य में देखने की प्रक्रिया में है, लगातार भावना, कार्रवाई और विचार के स्वस्थ एकीकरण प्राप्त करने के लिए संघर्ष में शामिल है। जर्सिल्ड, ने कहा कि भावनात्मक परिपक्वता एक ऐसी स्थिति नहीं है जिसमें सभी समस्याएं हल हो जाती हैं, बल्कि इसके बजाय, यह स्पष्टीकरण और मूल्यांकन की निरंतर प्रक्रिया है, जो भावना, सोच और व्यवहार को एकीकृत करने का प्रयास है। ब्रैड हैम्ब्रिक, ने दो विशेषताओं के संदर्भ में भावनात्मक परिपक्वता को परिभाषित कियाय उनके अनुसार, भावनात्मक परिपक्वता किसी की भावनाओं को अलग करने और अपनी भावनाओं को ठीक से पहचानने की क्षमता है।

भावनात्मक परिपक्वता सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देती है जो भेद्यता को प्राथमिकता देती हैय एक परिपक्व व्यक्ति भक्ति व्यक्त करने और उसे प्यार करने वाले व्यक्ति से प्यार की अभिव्यक्ति स्वीकार करके अपनी भेद्यता दिखा सकता है। अपरिपक्व व्यक्ति कमजोरी से चिंतित होता है और उसे प्यार और प्यार दिखाने और स्वीकार करने में समस्या होती है। अपरिपक्वता की अपरिपक्वता स्वीकृति की अनुमति देगा, लेकिन प्यार प्राप्त करने के लिए दूसरों की जरूरतों और आवश्यकता को पहचानने में विफल रहता है। वे इसे लेते हैं, लेकिन वे इसे नहीं देते। भावनात्मक रूप से मजबूत व्यक्ति की व्यक्तिगत सुरक्षा की भावना उसे दूसरों की जरूरतों पर विचार करने की अनुमति देती है। वह अपने व्यक्तिगत संसाधनों से पैसा, समय या कोई अन्य मदद करता है, जिसे वह प्यार करता है और परवाह करता है, उसके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में मदद करता है। शिक्षण एक भावनात्मक रूप से चार्ज की गई स्थिति है और यदि इसे उचित रूप से विनियमित नहीं किया जाता है तो चिंता, अवसाद और क्रोध हो सकता है। शैक्षिक सेटिंग्स में भावनाओं की प्रकृति को समझना छात्रों, शिक्षकों और माता-पिता के लिए सफल शैक्षिक अनुभव की कुंजी है। एक शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में भावनाएं केंद्रीय और महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। एक शिक्षक होने का महत्वपूर्ण हिस्सा मजबूत विपरीत भावनाओं का अनुभव करना है, और एक शिक्षक को पर्याप्त सक्षम होना चाहिए या सकारात्मक भावनाओं के साथ नकारात्मक भावनाओं को दूर करने की क्षमता होनी चाहिए

अध्ययन की आवश्यकता

भावनात्मक परिपक्वता रिश्तों और आत्मीयता को शुरू करने और बनाए रखने की आवश्यकता है। यह दीर्घकालिक खुशी और सफलता के लिए एक शर्त है। एक शिक्षक को रीढ़ की हड्डी माना जाता है जिसके चारों ओर एक पूरी शैक्षिक प्रक्रिया घूमती है। एक परिपक्व और सक्षम शिक्षक के बिना, शैक्षणिक व्यवस्था चरमरा जाएगी। इसलिए शिक्षा प्रणाली के सर्वोत्तम गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षा का एक ध्वनि कार्यक्रम आवश्यक है। शिक्षकों की गुणवत्ता और आवश्यकता-आधारित शिक्षा के बिना कोई भी शैक्षिक कार्यक्रम सफल नहीं हो सकता है। एक सफल शिक्षक वह है जो व्यवहार के मामले में गुणवत्ता और प्रभावशीलता, योग्यता, ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और परिपक्वता के मानसिक पूर्व-अपेक्षित गुणों के साथ है। कक्षा में छात्रों की सुविधा के लिए शिक्षकों को एक महत्वपूर्ण इकाई माना जाता है। शिक्षण के माध्यम से ही छात्र की क्षमता, रचनात्मकता और क्षमता का विकास संभव है। समकालीन समय में, शिक्षक के काम में शिक्षण और सीखने के अलावा विभिन्न कारकों की एक जटिल भूमिका शामिल है। इनमें तकनीकी नवाचारों के साथ ज्ञान, सूचना और कौशल को बनाए रखना और छात्रों, अभिभावकों और उनके समुदाय के साथ व्यवहार करना शामिल है।

ये सभी भूमिकाएं मांग रहे हैं और इसलिए शिक्षकों की भलाई और भावनात्मक परिपक्वता के बारे में मांग की चिंता है। इस तरह की भावनाएं शैक्षिक संदर्भों की अनुमति देती हैं और स्कूली प्रक्रियाओं में सभी को प्रभावित करती हैं। शोधकर्ताओं का सुझाव है कि शिक्षण की सेवा के भीतर भावनाएं व्याप्त हैं (मेयर और टर्नर, 2007)। गतिविधि, अनुभव और विधि की मदद से कक्षाओं में अनुशासन बनाए रखना शिक्षकों की जिम्मेदारी है।

इसलिए, अन्वेषक को माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों की भावनात्मक परिपक्वता को मापने के लिए आवश्यक लगा। यह

www.ignited.in

अध्ययन शिक्षकों को एक प्रामाणिक, वास्तविक और स्वस्थ तरीके से उसकी नकारात्मक भावनाओं को संभालने में मदद करेगा और सकारात्मक दृष्टिकोण, धैर्य और आत्मविश्वास विकसित कर सकता है ताकि वे अपने भविष्य के राष्ट्र बिल्डरों के लिए ज्ञान को प्रभावी ढंग से बातचीत और संस्कारित कर सकें.

साहित्य की समीक्षा

संबंधित साहित्य की समीक्षा शोधकर्ता को क्षेत्र की सीमा को परिभाषित करने में सक्षम बनाती है। यह शोधकर्ता को समस्या को हल करने और परिभाषित करने में मदद करता है। इस वर्तमान अध्ययन में, साहित्य की समीक्षाएं हैं- दत्ता। जादव, चेतिया। प्रणब। और सोनी, जे.सी. (2015) ने ष्लखीमपुर में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का एक तुलनात्मक अध्ययन और असम के सोनितपुर जिलों में एक अध्ययन कियाष्। यह अध्ययन 1000 छात्रों के नमूने में आयोजित किया गया था, जिनमें से 1000 छात्रों ने असम के दोनों जिलों में 32 सरकारी और निजी माध्यमिक विद्यालयों के 500 छात्र लड़कों और 500 छात्र लड़कियों को बेतरतीब ढंग से चुना। भावनात्मक परिपक्वता स्केल (एम। भार्गव और वाई। सिंह 1990) का उपयोग करते हुए डेटा संग्रह के लिए इस्तेमाल की जाने वाली वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि। अध्ययन में यह पाया गया है कि दोनों जिलों के माध्यमिक स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता के बीच एक बड़ा अंतर है, चाहे वे ग्रामीण और शहरी पुरुष और महिला, सरकारी और गैर-सरकारी पुरुष और महिलाएं, ग्रामीण पुरुष और महिलाएं हों और व्यक्तिगत ग्रामीण पुरुष और महिला माध्यमिक विद्यालय के छात्र। शहरी पुरुष और महिला, निजी पुरुष और महिला और निजी शहरी पुरुष और शहरी पुरुष और महिला, निजी पुरुष और महिला, निजी शहरी पुरुष और महिला दोनों जिले के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता में कोई अंतर नहीं है।

मल्लिक, रिंकू ए सिंह ए अर्चना ए चतुर्वेदी और कुमार, नरेंद्र (2014) 'हायर सेकंडरी स्टूडेंट्स इमोशनल मैच्योरिटी एंड अचीवमेंट पर एक अध्ययन' आयोजित किया। इस अध्ययन में पाया गया कि भावनात्मक परिपक्वता स्तर के संबंध में पुरुष और महिला हाई स्कूल के छात्रों के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर हैा भावनात्मक परिपक्वता के स्तर के संबंध में ग्रामीण और शहरी हाई स्कूल के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। सरकार और सरकार द्वारा अनुमोदित हाई स्कूल के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता के स्तर पर कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। भावनात्मक परिपक्वता के स्तर के संबंध में उच्चतर माध्यमिक छात्रों के रहने वाले दिन के विद्वान और छात्रावास के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर है और (अ) अर्थशास्त्र में उपलब्धि के स्तर के बारे में पुरुष और महिला हाई स्कूल के छात्रों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है।

मनजीत, कौर ए (2013) ने 'सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन' पर एक अध्ययन किया। यह अध्ययन चंडीगढ़ के सरकारी और गैर-सरकारी (निजी) वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों के 200 छात्रों, 100 लड़कों और 100 लड़कियों के समूह के साथ किया गया। अध्ययनों से पता चला है कि (ए) सरकारी और निजी स्कूल के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता के विभिन्न क्षेत्रों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। (इ) चंडीगढ़ के वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों के लड़कों और लड़कियों की भावनात्मक परिपक्वता के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है

सिंह, राशी (2012) 'ग्रामीण और शहरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्रों के लिए भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन' पर एक अध्ययन किया। उन्होंने भावनात्मक परिपक्वता के संबंध में ग्रामीण और शहरी, पुरुष और महिला, ग्रामीण पुरुष और ग्रामीण महिला और शहरी पुरुष और शहरी महिला वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया।

कुमार, तिवारी विनित (2012) ने 'इंटरनेट सर्फिंग के संदर्भ में 8 वीं से 12 वीं कक्षा के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन' पर एक अध्ययन किया। अपने अध्ययन में, उन्होंने 50 छात्रों (25 लड़कों, 25 लड़कियों) के बीच हरद्वार जिले में आकस्मिक नमूने के साथ इंटरनेट का उपयोग कर रहे थे और 50 (25 लड़के, 25 लड़कियों) का इंटरनेट सर्फिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी। परिणामों ने संकेत दिया कि जो लोग नियमित रूप से इंटरनेट का उपयोग नहीं कर रहे थे, वे इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की तुलना में भावनात्मक रूप से अधिक परिपक्व थे। यह भी पाया गया कि लड़के के छात्र लड़कियों की तुलना में बेहतर थे, जिनके संबंध में उनकी भावनात्मक परिपक्वता थी।

मुलेई पटनाम और वासेकर (2013) ने स्लम और शहरी क्षेत्रों के स्कूल जाने वाले बच्चों की भावनात्मक परिपक्वता और प्रभावशाली कारकों का अध्ययन किया। झुग्गी के बच्चे शहरी बच्चों से उनकी भावनात्मक परिपक्वता में भिन्न होते हैं, जिसे इस अध्ययन में परीक्षण किया गया था। नमूने में 120 बच्चे शामिल हैं, जिनमें से 60 झुग्गी से और 60 शहरी इलाकों से थे। शहरी बच्चों की भावनात्मक परिपक्वता और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन, कालानुक्रमिक आयु, क्रमिक स्थिति की क्षमता, परिवार के आकार और प्रकार, पालन-पोषण, दोस्तों की

www.ignited.in

सामान्य मानसिक क्षमता के साथ-साथ उनके माता-पिता की आयु, शिक्षा और रोजगार के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध पाया गया, जबकि उनका महत्वपूर्ण संबंध है। झुग्गी बच्चों की भावनात्मक परिपक्वता और उनकी पृष्ठभूमि चर के बीच पाया गया था।

लेखी (2015) ने सरकार से 939 (पुरुष और महिला) के नमूने पर अपने अध्ययन में। और पंजाब के निजी स्कूलों ने पाया कि लड़कों और लड़कियों की भावनात्मक परिपक्वता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है क्योंकि टी-अनुपात गैर-महत्वपूर्ण पाया जाता है। हालांकि, उनके औसत अंकों की तुलना करने पर, यह देखा गया है कि लड़कियों की तुलना में लड़कों ने बहुत कम (इसलिए अधिक भावनात्मक रूप से परिपक्व) स्कोर किया। लेकिन उनकी भावनात्मक परिपक्वता में ग्रामीण और शहरी किशोरावस्था के बीच महत्वपूर्ण अंतर पाए गए। उन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि भावनात्मक परिपक्वता ने बौद्धिक और शैक्षणिक उपलब्धि के साथ नकारात्मक और महत्वपूर्ण रूप से सहसंबंधित किया.

सुमन (2017) ने माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के विज्ञान में सीखने की उपलब्धि का अध्ययन अपने ज्ञान कौशल और भावनात्मक क्षमता के संबंध में किया। यह अध्ययन दिल्ली के दक्षिण पश्चिम क्षेत्र में स्थित छह माध्यमिक विद्यालयों से नौवीं (13 से 15 वर्ष के बीच की उम्र) के 500 छात्रों के नमूने पर आयोजित किया गया था। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि (I) भावनात्मक क्षमता और सीखने की उपलब्धि (पप) के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध थे और संज्ञानात्मक कौशल और सीखने की उपलब्धि (पपप) भावनात्मक क्षमता और माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों के संज्ञानात्मक कौशल से मिले।

शिक्षा व्यक्ति को उसकी शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक स्थितियों से संबंधित काफी बदलाव लाती है। यह शिक्षा से संबंधित हर किसी की जिम्मेदारी बनती है कि वह असफलता और अपव्यय को रोकें और छात्रों की ओर से उचित शैक्षणिक उपलब्धि और सफलता सुनिश्चित करें। अकादमिक उपलब्धि को एक समग्र मानदंड माना जाता है न कि एकात्मक एक। छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि पर महत्वपूर्ण परिपक्वता प्रभाव के रूप में भावनात्मक परिपक्वता। इस संदर्भ में, ठ.म्क की अकादमिक उपलब्धि और भावनात्मक परिपक्वता के बीच संबंधों का अध्ययन करना आवश्यक है। प्रशिक्षुओं। एक व्यक्ति जो अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखने में सक्षम है, को भावनात्मक परिपक्वता कहा जाता है। यह उचित मात्रा में हताशा (कपलान और बरार, 2000) को सहन करने की क्षमता है। भावनात्मक परिपक्वता स्वयं की एजेंसी के माध्यम से आवेग नियंत्रण की प्रक्रिया है। यह पुनरू उत्पीड़न की एक प्रक्रिया है, जो उनकी संस्कृतियों में स्वीकृत अभिव्यक्ति और दमन के अनुरूप है। वर्तमान जांच में बी.एड. विश्वविद्यालय परीक्षा में प्रशिक्षु के मॉडल परीक्षा को शैक्षणिक उपलब्धि के स्कोर के रूप में उपयोग किया गया है। रोमापाल (1984) द्वारा विकसित भावनात्मक परिपक्वता पैमाने का उपयोग छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता स्तर का आकलन करने के लिए किया गया था। डेटा का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक, विभेदक और सहसंबंध विश्लेषण की गणना की गई थी। यह माना जाता है कि शैक्षणिक उपलब्धि और भावनात्मक परिपक्वता के बीच एक सकारात्मक और महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है.

उपसंहार

जम्मू और कश्मीर राज्य के जम्मू संभाग में सरकारी शिक्षण संस्थानों में पढ़ाने वाले माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच भावनात्मक परिपक्वता पर अध्ययन केंद्रित है। सर्वेक्षण सह वर्णनात्मक आंकड़ों के आधार पर लिंग, योग्यता और स्थानीयता के संबंध में शिक्षकों के बीच भावनात्मक परिपक्वता की रिपोर्ट करने के लिए अध्ययन को बढ़ाया गया था। अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला गया कि पुरुष और महिला दोनों चाहे वे ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के हों और पीजी या पीजी से ऊपर हों, क्योंकि उनकी योग्यता में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था। यह पाया गया कि शिक्षकों को स्वयं और अपने छात्रों की जिम्मेदारियों और भावनाओं के बारे में अच्छी जागरूकता थी, जो कि शिक्षण संस्थानों में एक प्रभावी और कुशल शिक्षाशास्त्र, रणनीतियों और तरीकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

परिणामों ने यह भी संकेत दिया कि शिक्षकों में स्वयं की भावनाओं को पहचानने और उन्हें नियंत्रित करने की क्षमता थी, और उनके छात्रों को उनके शिक्षण संस्थान में, जो एक शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है.

संदर्भ

1. मंगल, एस। (जून 2013), शैक्षिक मनोवैज्ञानिक की अनिवार्यता, (7 वां संस्करण), पीएचआई, दिल्ली, (अध्याय 8)।

2. वेक्स्लर, डेविड। (1 मार्च 1950)। बौद्धिक विकास और मनोवैज्ञानिक परिपक्वता, बाल विकास, वॉल्य 21, नंबर 1 (मार्च 1950), पीपी। 45-50।

www.ignited.in

3. रॉय, सुशील। शैक्षिक मनोविज्ञान, सोमा बुक एजेंसी, कोलकाता, पीपी। 145

4. सिंह, राशी। (2012), इमोशनल मैच्योरिटी, इंटरनेशनल इंडेक्सेड एंड रेफरेड रिसर्च जर्नल, मई, 2012 के संबंध में ग्रामीण और शहरी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का तुलनात्मक अध्ययनय VoL-III; ISSUE-32 पीपी -34-35

5. कुमार, तिवारी विनित। (2012), इंटरनेट सर्फिंग, अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रमित और संदर्भित अनुसंधान जर्नल, ISSN: 0975- 3486, RNI & RAJBAL, खंड- IV, अंक 37, पीपी 37- के संदर्भ में 8 वीं से 12 वीं कक्षा के छात्रों के बीच भावनात्मक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन। 9।

6. कौर, मंजीत। (2013), वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का एक तुलनात्मक अध्ययन, अंतर्राष्ट्रीय अनुक्रमित और संदर्भित अनुसंधान जर्नल, आईएसएसएन 2250-2629, पीपी.48-49।

7. मल्लिक रिंकू, सिंह अर्चना, चतुर्वेदी पूनम और कुमार नरेंद्र। (2014), ए स्टडी ऑन हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स इमोशनल मैच्योरिटी एंड अचीवमेंट, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट इन टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट साइंस- कलिश, आईएसबीएन -978-1-63102-445-0, वॉल्यूम -21, अंक 1।

8. दत्ता, जादव, चेतिया, प्रणब, और सोनी, जेसी (२०१५), असम के लखीमपुर और सोनितपुर जिलों में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की भावनात्मक परिपक्वता का एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च (IJSR), ISSN (ऑनलाइन): 2319-7064, वॉल्यूम 4 अंक 9, सितंबर 2015

Corresponding Author

Ranjeet Kumar*

Research Scholar, Department of Education, OPJS University, Churu Rajasthan

baindasunil123@gmail.com